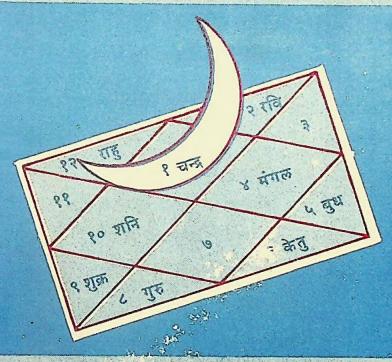
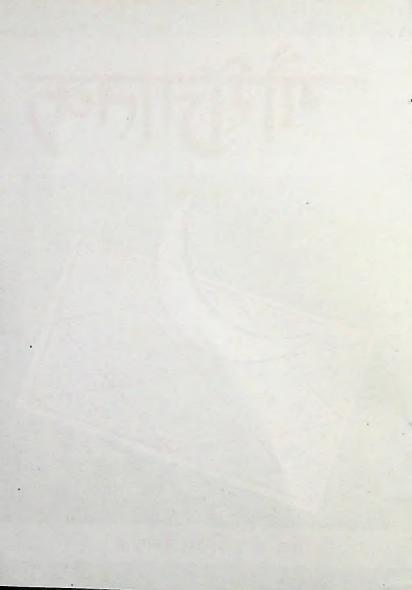
गौरीतातक



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन

-



123

श्रीः।

36.3

गौरीजातक।

(ज्योतिषका अपूर्व चमत्कारिक प्राचीन ग्रन्थ,)

पण्डित ईश्वरीमसादपाण्डेयविरचित-

भाषाटीकासमेत।

--

मुद्रक एवं प्रकाशकः स्वोमाराजा श्लीव्याकणादासा,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.





संस्करण : नवंबर २००६, सम्वत् २०६३

मूल्य १० रुपये मात्र।

© सर्वाधिकार: प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:

क्षेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers: Khemraj Shrikrishnadass, Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site: http://www.Khe-shri.com Email: khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

प्रस्तावना ।

यह ज्योतिषविद्याकी उत्तम पुस्तक है। हमने भलेप्रकार मिलाके देखा है विधि ठीक मिलती है हां,यदि जन्मपत्र ठीक हो तो ज्योतिषियों के पौ-बारह हैं, जन्मपत्र हाथमें लेकर मिलानकर जैसा क्रम इसमें लिखा है सो सुनावे. सुननेवाले वाहवाह करेंगे और दक्षिणा बटुआमें डालिये। इस पुस्तक्का सर्वाधिकार सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास अध्यक्ष "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस बम्बईको समर्पित है.

भवदीय--ईश्वरीप्रसाद पाण्डेय, संस्कृत पुस्तकालय, सदर मेरठ

1 THEFTON

यह ज्योतिपदिवाकी क्लम प्रस्तंक है। हमले मलेप्यतार विकाक वृद्या है विभि ठीक मिकती है हाँ,यदि जन्मपत्र ठीक हो तो ज्योतिविचाके पी-गारह है, जन्मपत्र द्वायते लेकर विकानकर जीवा कम इसमें किया है सो प्रनाते. प्रनावाले गहनाड कमा वसमें किरा है सो प्रनाते अन्तवाले गहनाड कमा पर्योगिकार सेंठ लेमराज औक्रणाद्वास अम्पार्थत है.

-19/9/01/4

अथ गौरीजातकम्

भाषाटीकासमेतम्।

प्रणम्य गौरीसंश्चिष्टपदाम्बुजयुगं तथा । विष्नेशपादाञ्जयुगं गौरीजातकमुच्यते ॥ १ ॥

अर्धनारीश्वर शिव तथा गणेशजीके चरणकमलद्ध-यको प्रणाम कर "गौरीजातक" नामक इस यन्थको कहता हूं ॥ १ ॥

१ सूर्यः।

चन्द्रात्प्रथमगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत् । परदेशगयोगी स्यात्कुदुंबेन कलिः सह ॥ १ ॥

जन्मकालमें जब चन्द्रमासे स्प्री प्रथम स्थानमें हो तब वह बालक परदेशमें जानेवाला और कुटुंबकें लोगोंके साथ कलही होय ॥ १॥ (६)

२ सूर्यः ।

जन्मकाले यदा भानुर्यदि चन्द्राह्मितीयगः। वाजिभृत्याऽजकाश्चेव राजमानी भवेन्नरः॥ २॥

जो जन्मकालमें चन्द्रमासे दूसरे स्थानमें सूर्य हो तो घोडे, हाथी, बकरी आदि चतुष्पदोंका धनी हो और राज्यमें संमान हो ॥ २॥

३ सूर्यः।

चन्द्रानृतीयगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत् । स्वर्णाधीशो भवेत्पुंसां राजमानी भवेन्नरः ॥ ३ ॥

जब जन्मकालमें चन्द्रमासे तीसरे स्थानमें सूर्य हो तब वह पुरुष अशर्फियोंका मालिक हो और उसका राज्यमें सन्मान तथा पुरुषोंमें संमान हो ॥ ३ ॥

४ सूर्यः ।

चन्द्राञ्चतुर्थगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत् । न स पश्येन्मातृसुखं कथितं गणकोत्तर्मैः ॥ ४ ॥ जब जन्मकालमें चन्द्रमासे चौथे स्थानमें सर्प हो तब माताका सुख न हो, यह बात पूर्व ज्योतिषियोंने कहीहै ४ ५ सूर्यः।

चन्द्रात्पञ्चमगो भानुर्जनमकाले यदा भवेत्। शत्रूणां जयकारी च भटकम्मरतः सद्। ॥ ५ ॥

यदि जन्म कालमें चन्द्रमासे पांचवें सूर्य हो तो वह शत्रुओंका जीतनेवाला हो और सदा युद्धकर्ममें लगा रहे॥ ५॥

६ सूर्यः।

चन्द्रात्मष्टस्थितो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत्। उक्षादीनां सुखं तस्य बहुकन्या भवन्ति च ॥ ६ ॥

चन्द्रमासे छठे स्थानमें यदि सूर्य हो तो बैल आदि-कोंका सुख पाप्त हो और बहुतसी कन्या हों ॥ ६ ॥

७ सूर्यः ।

चन्द्रात्सप्तमगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत्। स्त्री सुरूपा गौरवर्णा पुत्रजाता पतिव्रता ॥ ७॥ जन्मकालमें चन्द्रमासे सातवें स्थानमें सर्य हो तब

(८) गौरीजातकम्।

उसके रूपवती नारी गोरे रंगकी हो और पुत्रोंकी समू-ह्युता हो और पतिव्रता हो ॥ ७ ॥

८ सूर्यः।

चन्द्राद्ष्यगो भानुर्जन्मकाले यदा अवेत्। कोधी कुष्ठी दरिद्रश्च सदा वैराग्यसंयुतः ॥ ८॥ चन्द्रमासे आठवें स्थानमें सूर्य हो तो वह मनुष्य कोधी कोढी तथा दरिद्री और वैराग्यवान् हो॥ ८॥

९ सूर्यः।

चन्द्राच्च नवमे भातुः पूर्णमापतितो यदि ॥ अधर्मी चानृती चैव बन्धुभिश्वासमो भवेत्॥ ९॥

चन्द्रमासे नवमें स्थानमें यदि स्र्यदेवता सिंहराशि-का वा मेपराशिका होकर बैठा हो तो अधर्मी, झूठा और भाइयोंसे समान स्वभावका नहीं होवेगा ॥ ९ ॥

१० सूर्यः।

चन्द्राच दशमे भावुर्जन्मकाले यदा भवेत्। राजमान्यो बहुज्ञाता प्रसिद्धः कुलनायकः ॥१०॥ चन्द्रमासे दशवें स्थानमें यदि सूर्य हो तो राजमें संमान और बहुत जाननेवाला तथा प्रसिद्ध और अपने कुलमें सरदार हो ॥ १०॥

११ सूर्यः ।

चन्द्रादेकादशे भानुर्जन्मकाले यदा भवेत्। अश्वादिवेदाङ्त्रिसुखो धनवांश्च न संशयः॥११॥

जन्मसमयमें चन्द्रमासे ग्यारहवें सूर्य हो तो घोडा आदि चौपायोंका सुख हो और धनवान् हो इसमें संदेह नहीं ॥ ३१ ॥

१२ सूर्यः।

चन्द्राह्यदशगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत्। चन्द्राह्यदशगो ह्यङ्गो लग्नात्करणमुच्यते॥ १२॥

जन्मकालमें चन्द्रमासे बारहवें स्र्य हो तो चन्द्रमासे बारहवां अंग कहता है और लग्नसे करणसंज्ञा है॥१२॥ इति १-१२ रविफलानि ।

१. भौमः।

चन्द्रयुक्तो यस्य भौमो जनमकाले यदा भवेत्। उद्राच्याधिविकृती रक्तवणों भवेन्त्ररः॥ १॥ जन्मकालमें चन्द्रमासे युक्त जब भौम हो तब पेटमें रोग हो और लालरंगका मनुष्य हो॥ १॥

२ भौमः।

चन्द्राहितीयगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् । धनाधिपो भवेत्पुंसां सदा स्यात्कामिनीप्रियः॥२॥ चन्द्रमासे दूसरे स्थानमें मंगल हो तब वह मनुष्य पुरुषोंमें धनवान् हो और सदा श्चियोंका प्यारा हो॥२॥ ३ भौमः।

३ भौमः।

चन्द्रात्तृतीयगो भौमो जन्मकाले यदा अवेत्। सुतभातृिस्त्रयश्चेव तुल्यशीलपराक्रमः॥ ३॥ यदि जन्मकालमें चन्द्रमासे तीसरे स्थानमें मंगल हो तो पुत्र भाई स्नी इनका सुख हो और वरावर पराक्रम बना रहे॥ ३॥

४ भौषः।

चन्द्राचतुर्थगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।

सुखं न दृश्यते पुंसां स्त्रीणां मृत्युःपुनःपुनः ॥ ४ ॥

चन्द्रमासे चौथे स्थानमें भौम हो तो जन्मनेवालेको

पूर्ण सुख नहीं । और बारंबार स्त्री मरै ॥ ४ ॥

५ भौमः।

चन्द्रात्पश्चयगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ॥ पुत्रहीनस्तथा स्त्रीभिर्लघ्ने पतिति निश्चितम् ॥५॥

यदि जन्मकालमें चन्द्रमासे पांचवें स्थानमें मंगल हो तो स्त्री और पुत्रादिसे हीन पुरुष जानो ॥ ५ ॥

६ भौमः।

चन्द्रात्षष्ठगतो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् । शञ्चपक्षक्षयकरो गणिकानां प्रियंवदः ॥ ६ ॥

यदि जन्म कालमें चन्द्रमासे छठे स्थानपर मंगल हो तो शत्रुपक्षका नाश करनेवाला हो और वेश्याओंका प्यारा मीठा बोलनेवाला हो ॥ ६ ॥ (92)

७ भौमः।

चन्द्रात्सप्तगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत्। भवेदामव्याधियुक्तो निर्लज्जो व्याधिनालसः॥७॥ यदि जन्म समय चन्द्रमासे सातवें मंगल पडा हो तब वह पुरुष आमरोगसे पीडित और निर्लज और सदा देहमें व्याधि रहे उससे आल्सी हो ॥ ७॥

८ भौम।

चन्द्राद्ष्यगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् । आत्मज्ञानीभवेद्वालोऽमितभाष्यलसःसदा ॥ ८॥ जन्मकालमे चन्द्रमासे आठवें भौम हो तो वह बालक आत्मज्ञानी और आलसी तथा अमितभाषी होता है॥८॥

९ भौमः ।

चद्रान्नवमगो भौमो जीवहिष्युतो भवेत्। लक्ष्मीवांश्च भवेतपुंसां वृद्धकाले न संशयः॥ ९॥ चंद्रमासे नवम स्थानमें मंगल बृहस्पतिकी दृष्टिकरके युक्त हो तो वह मनुष्य बुढापेमें पुरुषोंमें धनवान् होय इसमें संदेह नहीं॥ ९॥

१० भौमः।

चन्द्राह्शमगो भौमो जन्मकाले यहा भवेत्। धनाधीशो भवेत्पुंसां वृद्धकाले न संशयः ॥१०॥ यदि जन्म समयमें चन्द्रमासे दशवें स्थान मंगल हो तो वह मनुष्य बुढायेमें धनवान् हो इसमें सन्देह नहीं १०॥

११ औमः।

चन्द्रादेकादशे भौमो जन्मकाले यदा भवेत्। राजद्वारे प्रसिद्धश्चसर्वहर्ष (रूप) समन्वितः॥ १ १॥ जन्मसमयमे चन्द्रमासे ग्यारहवें मंगल हो तो राज-द्वारमें प्रसिद्ध और सब आनन्दोंसे (रूपोंसे) युक्त हो १ १

१२ भीमः।

चन्द्राह्यादशगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत्।
मात्राद्यसुखकारी च सदा कष्ट्रप्रदायकः ॥ १२ ॥
चन्द्रमासे बारहवें स्थानमें भौम हो तो माताको
दुःख देनेवाला हो और सदा सबको कष्ट दे ॥ १२ ॥
इति १-१२ भौमफलानि ॥

१ बुधः।

चन्द्रयुक्ते तु सौम्ये स्यात्सर्वकामार्थसिद्धिदः। सर्वसिद्धिभवेन्नित्यं सुखहष्टो भवेन्नरः॥ १॥

चन्द्रमासे युक्त बुध होय तो सर्व कामोंकी सिद्धि देनेवाला हो, नित्य सर्व सिद्धि और दुष्ट मनुष्य हो ॥१॥

२ बुधः ।

चन्द्राहितीयगः सौम्यो जन्मकाले यदा भवेत् । गृहे बहुधनप्राप्तिः सुशीलो नीरुजो भवेत् ॥ २॥

चन्द्रमासे दूसरे बुध हो तो उसके घरमें बहुत धन हो सुशील स्वभाव और रोगादिसे पीडित न होवे ॥२॥

३ बुधः ।

चन्द्राक्तियगः सौम्योऽर्थसिद्धि कुरुते सदा । राजमानं च कुरुते लक्ष्म्या निश्चलतां तथा ॥३॥

चन्द्रमासे तीसरे बुध हो तो धनकी सिद्धि हो। राजमें आदर हो और सदा लक्ष्मीवान् रहे निर्धन कभी न हो॥ ३॥

भाषाटीकासमेतम् । (१५)

४ बुधः ।

चन्द्राञ्चतुर्थगः सौम्यः सर्वदा सुखदायकः । मातृपक्षान्महालाभं सुखी जीवति मानवः ॥४॥

चन्द्रमासे चौथे बुध हो तो सदा सुख हो और मामा नानाके यहांसे लाभ हो और सुखसे जीवे ॥४॥

५ बुधः।

चन्द्रात्पश्चमगः सौम्यो बुद्धिमन्तं विचक्षणम् । रूपवन्तं महाकामं कुर्याद्दाक्षिण्यसंयुतम् ॥ ५ ॥ चन्द्रमासे पांचवं बुध हो तो वह बुद्धिमान् और चतुर, रूपवान्, महाकामी और चतुराई रचनेमं कुशल हो ५

६ बुधः।

चन्द्रात्षष्ठगतः सौम्यः कृपणः कातरो भवेत् । युद्धकाले महाभीरू रूपवान्दीर्घलोचनः ॥ ६ ॥ चन्द्रमासे छेठ बुध हो तो कंजूस तथा कायर युद्ध समय बडा डरपोक हो और रूपवान् और बडे नेत्र-वाला हो ॥ ६ ॥ ७ बुधः।

चन्द्रात्सप्तमगः सौम्यो जन्मकाले यदा भवेत्। धनवान्कृपणश्चेव दीर्घायुश्च भवेत्ररः॥ ७॥

जन्मकालमें चन्द्रमासे सातवें बुध हो तो धनवान् और कंजूस तथा दीर्घायु हो ॥ ७ ॥

८ बुधः।

चन्द्रादृष्टमगः सौम्यो शीतदेहो भविष्यति । प्रसिद्धो धैर्यवाँ छोके शत्रुपक्षक्षयंकरः ॥ ८॥

चन्द्रमासे आठवें बुध हो तो ठंढा देह हो । मिसख और धीरजवान छोकमें हो तथा शत्रुपक्षका नाशक होट

९ बुधः।

चन्द्रान्नवमगे सौम्ये स्वयर्मस्य विरोधकः । परधम्मरतो नित्यं स्वधर्मपरिनिन्दकः ॥ ९ ॥

चन्द्रमासे नर्वे बुध हो तो अपने धर्मका विरोधी हो। पराये धर्ममें सदा शिति करनेवाला हो और अपने धर्मकी निन्दा करनेवाला हो।। ९।। १० बुधः।

चन्द्रादशमगे सौम्ये राजरोगी नरः सदा। षष्ठे कर्मणि वै चन्द्रः कुटुंबे नायको भवेत्॥१०॥ चन्द्रमासे दश्वें स्थानमें यदि बुध हो तो मनुष्य

क्षयरोगवाला होता है,छठे और कर्मस्थानमें चन्द्र हो तो नर कुटुम्बमें प्रधान हो ॥ १ ॥

११ बुधः।

चन्द्रादेकादशे सौम्ये दिव्यदृष्टिर्भवेत्ररः। वर्षे चैकादशे पुण्यं पाणिसंग्रहणं भवेत् ॥ ११ ॥ चन्द्रमासे ग्यारहर्वे भवनमें बुध हो तो वह दिव्यदृष्टि पुरुष हो और ग्यारहवें वर्षमें उसका विवाह हो ॥११॥

१२ बुधः।

चन्द्राह्यदशगे सौम्ये कुष्ठरोगी भवेत्ररः। शास्त्रं सुपठचते नित्यं जयाभावोदिनेदिने ॥१२॥ चन्द्रमासे बारहवें बुध हो तो कुष्ठका रोगी हो शासके नित्य पढ़नेवाला और वह दिन २ हारता ही रहे॥१२॥

इति १--१२ बुधफलानि ॥

(90)

१ गुरुः।

चन्द्रयुक्तो भवेजीवो भवयोगो भविष्यति । सर्वारिष्टविनाशश्च बहुराजो भवेन्नरः ॥ १ ॥

यदि चन्द्रमासे युक्त बृहस्पति हो तो वह (भवयोग) कर्क नामसे कहा जाताहै। उसके सारे अरिष्ट रोग नाश हो और बहुत मनुष्योंका सरदार हो॥ १॥

२ गुरुः।

चन्द्राहितीयगो जीवो धर्मिष्ठः पापवर्जितः। असुत्राही महायुद्धे राजमानी सदा भवेत्॥ २॥

चन्द्रमासे दूसरे बृहस्पति हो तो धर्म्मात्मा और पापसे वर्जित पुरुष हो युद्धमें शत्रुओंके प्राण लेनेवाला और राजमें सन्मान पानेवाला हो ॥ २ ॥

३ गुरुः।

चन्द्राचृतीयगो जीवो नराणां चैव वल्लभः।
पापग्रहेऽर्धवृद्धिश्च वर्षेकादशसप्तमे ॥ ३॥
यदि चन्द्रमासे तीसरे स्थानमें जीव हो तो मनुष्योंका

प्यारा हो। पापयहोंसे युक्त हो तो सप्तम और एकादश वर्षमें आधा फल हो ॥ ३ ॥

४ ग्रहः ।

चन्द्राचतुर्थगो जीवः सुखेनैव विवर्जितः। मातृपक्षे महाकष्टं परगेहें च कर्मकृत् ॥ ४ ॥

चन्द्रमासे चौथे बृहस्पति हो तो सुखसे रहित और याता माया नाना इनको बडा कष्ट हो तथा पराये घरमें काम करनेवाला हो ॥ ४ ॥

५ गुरुः ।

चन्द्रात्पंचमगो जीव उदासी गृहवर्जितः। रामापो बाह्यभावेषु भिक्षाभोक्ता निरर्थकः ॥५॥

चन्द्रमासे पांचवें यदि बृहस्पति हो तो उदासीन और घरकरके वर्जित हो,स्रियोंकी रक्षा करनेवाला हो बाहरके भावोंमें और भीख मांगकर खानेवाला निरर्थक हो॥५॥

६ गुरुः।

चन्द्रात्षष्ठगतो जीवो दिव्यद्दष्टिर्भवेननरः। तेजोहीनो नरो न स्यादितरुग्णो महाधनः॥ ६॥

(२०) गौरीजातकम् ।

चन्द्रमासे छठे बृहस्पति हो तो दिन्यदृष्टि नर हो, तेजो-हीन बहुत रोगी और बडा धनवान् न हो ॥ ६ ॥ ७ ग्रहः ।

चन्द्रात्सप्तमगो जीवो बहुजीवी व्ययं विना । स्थूलदेहो दोहवस्त्रो गृहमध्ये च नायकः ॥ ७ ॥ चन्द्रमासे सातवें बृहस्पति हो तो बहुत दिन जीवे, स्वरच थोडा रहे, मोटा भारी शरीर हो, अपने द्वारका स्वामी हो ॥ ७ ॥

८ गुरुः ।

चन्द्राद्ष्यमगो जीवो देहे रोगी महामतिः।
सुतात्मजैर्महाक्केशी सुखं स्वप्ने न पश्यति ॥८॥
चन्द्रमासे आठवें गुरु हो वह देहमें रोगी और बढा
बुद्धिमान् हो, बेटी बेटाओंसे बढा क्केश हो, सुपनेमें भी
सुस न देखे॥ ८॥

९ गुरुः।

चन्द्रात्रवमगो जीवो धर्मिष्ठो नरपूजितः। स्वधर्मनिरतो नित्यं देवतागुरुपूजकः॥ ९॥

चन्द्रमासे नवें बृहस्पति हो तो धर्मात्मा और मनु-ष्योंमें पूजित हो और अपने धर्ममें रत और गुरु देवता-ओंकी पूजा करनेवाला हो ॥ ९ ॥

१० गुरुः।

चन्द्राइशमगो जीवो जन्मकाले यदा भवेत्। पुत्रदारपरित्यागी तापसो हि भवेन्नरः ॥ १०॥ जन्ममें चन्द्रमासे दशवें गुरु हो तो पुत्रस्रीका त्यागी हो और तपस्वी नर हो ॥ १०॥

११ गुरुः।

चन्द्रादेकादशे जीवो जन्मकाले यदा भवेत्। अश्वारूढो भवेत्पुंसां राजतुल्यो भवेन्नरः॥ ११॥ चन्द्रमासे ग्यारहवें बृहस्पति हो तो घोडोंकी सवारी

करे और राजाके तुल्य हो ॥ ११ ॥

१२ ग्रहः।

चन्द्राह्यदशगो जीवो जन्मकाले यदा भवेत्। कुटुंबस्य विरोधी च सुखं शत्रुसमं भवेत् ॥१२॥

(२२) गौरीजातकम्।

चन्द्रमासे बारहवें जीव हो तो कुटुम्बका विरोधी हो सुख शत्रुके समान होते हैं ॥ १२ ॥ इति १-१२ गुरुफलानि ।

१ गुकः।

चन्द्रात्प्रथमगः शुको जन्मकाले यदा अवेत् । जन्ममृत्युः सदाव्याधिः सन्निपाती भवेन्नरः॥१॥ चन्द्रमासे पहिले स्थानमें शुक हो तो जन्मकालमें ही मृत्युपानेवाला वा सदारोगी वा सन्निपातरोगी मनुष्यहो १ २ शुकः ।

चन्द्रादितीयगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत्।
महाधनी तथा रोगी राजतुल्यो भवेन्नरः॥ २॥
चन्द्रमासे दूसरे शुक्र हो तो महाधनवान् और रोगी

राजाके बरोबर मनुष्य हो ॥ २ ॥

३ शुक्रः।

चन्द्रानृतीयगः शुको जनमकाले यदा भवेत्। धर्मिष्ठो बुद्धिमांश्चैव म्लेच्छो वे लाभदायकः॥३॥ चन्द्रमासे तीसरे शुक्त हो तो धर्मात्मा वुद्धिमान् म्लेच्छ और लाभदायक हो ॥ ३ ॥

४ शुकः।

चन्द्राञ्चतुर्थंगे शुक्रे जन्मकालं गते सित । कफार्दितोऽक्षिरोगी च जन्मतो धनवर्जितः ॥४॥ जन्म कालमें यदि चन्द्रमासे चौथे शुक्र हो तो कफरोगी और नेत्ररोगी, जन्मसे ही दिरदी हो ॥४॥

५ शुक्रः ।

चन्द्रात्पश्चमगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत्। बहुकन्यासमायुक्तो धनवान्कीर्तिवर्जितः ॥ ६ ॥ यदि चन्द्रमासे पांचवे स्थानमें शुक्र हो तो वह बहुत कन्याओंसे युक्त, धनवान् और यशसे वर्जित हो ॥५॥

६ गुकः।

चन्द्रात्षष्ठं गतः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् । भुक्तान्नभक्तकादी च संत्रामे च पराजितः ॥६॥ जब जन्मकालमें चन्द्रमासे छठे स्थानपर शुक्र

गौरीजातकम् ।

(88)

हो तब वह जूंठा भात आदिका खानेवाला हो और संयाम छोडकर भाग जाय ॥ ६ ॥

৩ গ্রুদ্ধ: ।

चन्द्रात्सप्तमगः ग्रुको जन्मकाले यदा भवेत् । पुरुषार्थैर्विहीनः स्याच्छङ्कितश्च पदे पदे ॥ ७ ॥

चन्द्रमासे सातवें शुक्र हो तो बलहीन हो और पद पद पर डरता रहै ॥ ७ ॥

८ गुकः।

चन्द्रादृष्टमगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् । प्रसिद्धश्च महायोद्धा दाता भोक्ता महाघनी ॥८॥

चन्द्रमासे आठवें शुक्त हो तो वह विख्यात पुरुष हो महायोद्धा दानी खाने छुटानेवाला और महाधन-वान् हो ॥ ८॥

९ शुक्रः।

चन्द्रान्नवमगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत्। बहुभ्राता तथा मित्रं भगिनी च तथा भवेत्॥९॥

भाषाटीकासमेतम्। (२५)

चन्द्रसे नवें शुक्र हो तो बहुत भाई हों मित्र और बहन भी बहुत हों ॥ ९ ॥

१० ग्रुकः।

चन्द्रादृशगमः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् । महानृज्ञः परश्चाघी रिपुरोगविवर्जितः ॥ १०॥

चन्द्रमासे दशवें शुक्र हो तो बहुत सीधा तथा पराये गुणोंका कहनेवाला और शत्रु रोग रहित हो ॥१०॥ ११ शुक्रः।

चन्द्रादेकादशे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत्। बहुपुत्रस्तथा कन्या बहुस्त्रीभिः करम्रहः॥ ११॥

चन्द्रमासे ग्यारहवें शुक्र जन्मकालमें हो तो पुत्र और कन्या और बहुतसी स्त्रियोंसे युक्त हो ॥ ११॥ १२ शुक्रः।

चन्द्राह्यदशगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत्। कपटी लज्जया हीनः परस्त्रीषु रतः सदा ॥१२॥ चन्द्रमासे बारहवें शुक्र होने पर कपटी और निर्लज (२६) गौरीजातकम्।

तथा पराई स्त्रियों प्रीतिस करनेवाला हो ॥ १२॥ इति १-१२ शुक्रफलानि ॥

१ शनिः।

चन्द्रात्प्रथमगः सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत् । मन्दगामी हढः पुंसां दुःसहो दैन्यवर्जितः ॥ १॥

चन्द्रमासे प्रथम शनैश्वर हो तो धीरे २ चलनेवाला और दृढ हो, दूसरा आदमी उसको देखके डरैगा ऐसा रहनेवाला और दीनतासे वर्जिन हो ॥ १ ॥

२ शनिः।

चन्द्राद्दितीयगः सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत् । मातुः संकष्टकारी च पिता तस्य न जीवति ॥२॥

चन्द्रमासे दूसरे शनि हो तो माताको कष्ट देने-

बाला और पिताका मारक हो ॥ २॥

३ शनिः।

चन्द्रानृतीयगः सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत् । बहुकन्या भविष्यन्ति जाता मृत्युं प्रयान्ति च॥३॥ चन्द्रमासे तीसरे शानि हो तो बहुत कन्या हो और मर जायँ ॥ ३ ॥

४ श्रानः।

चन्द्राञ्चतुर्थगः सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत्। शत्रूणां नाशकारी च सुखं जीवति मानवः ॥४॥

चन्द्रमासे चौथे शनैश्वर हो तो शत्रुओंका नाश कर-नेवाला हो और सुखसे जीवे ॥ ४ ॥

५ शनिः।

चन्द्रात्पंचमगः सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत्। अतिना सह वाणिज्यं भार्या च प्रियवादिनी॥५॥

चन्द्रमासे पांचवें शनि हो तो बहुत व्यापार करे और मीठी बोळी बोळनेवाळी स्त्री हो ॥ ५॥

६ शनिः।

चन्द्रात्षष्ठं गतः सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत् । महाक्लेशश्च कष्टी चाप्यायुहींनो भवेत्ररः ॥६॥

(२८) गौरीजातकम् ।

चन्द्रमासे छठे शनि हो तो महादुःख पावे और अल्पायु हो ॥ ६ ॥

७ शनिः।

चन्द्रात्सप्तमगः सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत्।।
महाधनी च दाता च बहुमार्यापरिग्रहः॥ ७॥

जन्मकालमें चन्द्रमासे सातवें शनि हो तो बडा धन-वान् दानी और बहुत स्त्रियोवाला हो ॥ ७ ॥

८ शनिः।

चन्द्राद्ष्टमगः सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत्। बहुदाराः शुभाश्चेव क्लेशी क्ष्टवपुः सदा ॥८॥

चन्द्रमासे आठवें शानि हो तो शोयन बहुत श्री हों मन क्रेशी और शरीर सदा कष्टमें रहे ॥ ८ ॥

९ शनिः।

चन्द्रान्नवमगः सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत्। धर्मिष्ठः सत्यवादी च दाता भोक्ता विचक्षणः॥९॥ चन्द्रमासे नववें शनि हो तो धर्मात्मा सत्य बोळने वाला दानी और भोगनेवाला चतुर हो ॥ ९ ॥ १०शनिः।

चन्द्राह्शयगः सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत् । नृपतुल्यो भवेदेही कृपणो धनपूरितः ॥ १०॥

चन्द्रमासे दशवें शनि हो तो राजाके बराबर हो,

कंज़ूस हो, धन बहुत हो ॥ १० ॥ ११ शनिः।

चन्द्रादेकादशे सौरिर्जनमकाले यदा भवेत्। देहकष्टो महात्यागी सुज्ञो जीवति मानवः ॥११॥

चन्द्रमासे ग्यारहवें शनि हो तो देह रोग सहित हो

बडा दानी व सुज्ञ हो जीवे ॥ ११ ॥

१२ शनिः।

द्वाद्शे भवने सौरिश्चन्द्रादापतितो यदि । निधनो भिक्षुकश्चैव धम्मबुद्धिर्भवेत्र हि ॥ १२ ॥

बारहवें स्थानमें चंद्रमासे शनि पडा हो तो निर्धन मैंगता हो धर्मबुद्धि भी न हो ॥ १२ ॥

मगता हा यमबुष्धि ना न हा ॥ ४२ ॥ इति १–१२ शनिफ्छानि ।

(३०) गौरीजातकम्।

९-१०-५ राहुः।

धर्मकर्मसुते धर्मे चन्द्राच पतितस्तमः । जन्मकाले नृपश्चैव वृद्धकाले महाधनी ॥ १ ॥

नववें वा दशमें वा पांचवें चंद्रमासे राहु हो तो कि जन्मसे राजा हो और बुढापेमें महाधनवान् हो ॥ १॥

६-१२ राहुः।

षष्ठे च द्वादशे राहुश्चन्द्राच्च पतितो यदि । राजराजस्य मन्त्री स्याद्धनधान्यसमाकुलः ॥२॥ चन्द्रमासे छठे, बारहवें राहु पडे तो वह बहुत बडे राजाका पंत्री हो ॥ २ ॥

४-७ राहः।

चतुर्थे सप्तमे राहुश्चन्द्राच्च पतितो यदि । मातापित्रोः कष्टदायी सदा च सुखकारकः ॥३॥

चौथे सातवे चन्द्रमासे यदि राहु पडा हो तो माता पिताको अत्यन्त कष्ठदाता हो और आप सदा सुखी रहे ॥ ३ ॥

६ राहः।

अरिगेहे यदा राहुश्चन्द्रादापतितो यदि । स्थानभ्रष्टो भवद्वाल आपदा च पदे पदे ॥ ४॥

यदि चन्द्रमासे शत्रु स्थानमें राहु पडा हो तो वह बालक जनमभूमिसे और कहीं बसे और पदपदपर दुःखी हो ॥ ४ ॥

इति १-१२ राहुफलानि ।

सर्वे शहाः सन्तु सदा लोकानां सुखदायिनः । कदापि दयया कष्टं मा कुर्वन्तिति चार्थये ॥५॥

सब यह सदा छोगोंको सुखदायी हों छपाकर कभी किसीको कष्ट न दें ॥ ५॥

इति गौरीजातकं समाप्तम्।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान:

खेमराज श्रीकृष्णदास अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, ९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, ७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर, मुंबई - ४०० ००४. दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास ६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट, पुणे - ४११ ०१३. दूरभाष-०२०-२६८७१०२५, फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग, जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक, कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१ द्रशाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१. दूरभाष - ०५४२-२४२००७८



हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, ९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, ७ वी खेतवाडी वॅक रोड कार्नर, मुंबई - ४०० ००४. दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास

६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,पुणे - ४११ ०१३. दरभाष-०२०-२६८७१०२५, फैनस -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस विल्डिंग, जूना छापाखाना गली, अहिल्यावाई चौक, कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१. दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास

चीक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१. दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KILLARA SHRIKASHIKADIS